International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 61-63

वर्तमान फिल्मसंगीत का बच्चों पर पड़ता दुष्प्रभाव

सुधांशू मोहन केस्टवाल

हिंदी विभाग, रामानुजन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, कालकाजी, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

फिल्मी गीतों का आतंकनुमा प्रभाव आजकल हमारी ज़िंदगी का अनिवार्य अंग सा बन गया है। गंभीरता से परीक्षा की तैयारी करता विद्यार्थी जबतक अभिनेत्री के ठुमकों के ही अनुपात में गाइका की मधुर ध्वनि के मिश्रण को ग्रहण नहीं करता तबतक अध्ययन की गंभीतता दिमाग़ में प्रवेश करने को तैयार ही नहीं होती। रसोई में खाना बनाती गृहणई के हाथों का स्वाद बिना वर्तमान संगीत के भोजन में जायका पैदा ही नहीं करता। गाड़ी चला रहे महानुभावों की तो बात ही क्या कहिए इनके गेयर और ऐक्सेलरेटर तक फिल्मी गानों की लय और ताल के ही अनुसार गतिमान रहते हैं बाद में उसका कोई अनुचित परिणाम ही क्यों न हो जाए। यदि यूँ कहा जाए कि आजके फिल्मी गाने हमारी दिनचर्या में घुस गए हैं तो कदाचित् अतिशयोक्ति न होगी।

आयु की दृष्टि से आबाल-वृद्ध समान रूप से इस संगीत से प्रभावित हो रहे हैं। प्रभावित होना उतना महत्व नहीं रखता जितना प्रभाव का सकरात्मक या नकारात्मक होना रखता है। जब हम आयु की दृष्टि से परिपक्व होते हैं तो प्रभाव के परिणाम को भलीभाँति समझ सकते हैं लेकिन बच्चों के लिए यह समझ पाना संभव नहीं हो पाता। यही कारण है कि आजकल के फिल्म संगीत के कुप्रभाव हमारे बच्चों को दूर तक प्रभावित कर रहे हैं। यद्यपि आजकल के गीतों में ज़्यादातर "खग ही समुझै खग की भाखा" जैसी अभ्व्यक्ति रहती है लिकिन जो भी थौड़ी बहुत शब्दावली रहती है वह अधिकाँशतः अनर्गल और फूहड़ रहती है। परिवेशगत अन्य तत्वों की ही तरह ये गाने भी बच्चों के मस्तिष्क में जल्दी अधिकार जमा लेते हैं और वे जाने-अनजाने इनका व्यवहार करने लगते हैं। अभिभावक भी इसके दूरगामी प्रभाव को नहीं समझ पाते और ऐसे फूहड़ गीतों के व्यवहार में बच्चों की सहायता करने लगते हैं।

भारतीय फिल्मों का वर्तमान संगीत न सिर्फ अराजकता की हद पार कर रहा है बल्कि हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में प्रवेश कर उसका एक फूहड़ और अश्लील रूप प्रस्तुत करने का प्रयास करने की कोशिश कर रहा है। वह चाहे व्यवस्था हो या कानून। धर्म, जाति या संस्कार हो। प्रेम, सौंदर्य, विवाह आदि सामाजिक सरोकारों आदि जीवन के प्रत्येक पहलू को यह संगीत अपने कलेवर में समेट लेना चाहता है और कोई इसको रोकने-टोकने वाला नहीं है। किसी फिल्म पर सौ-सौ कट्स लगाने वालों को भी इस संगीत की यह हरकत नज़र नहीं आती।

मैं भी इस विषनुमा संगीत का व्यसनी हूँ लेकिन मेरी चिंता इस संगीत के अबोध बच्चों पर पड़ने वाले कुप्रभाव को लेकर है। आजकल बन रहे फिल्मी गानों का एक ट्रेंड बन चुका है कि वे बच्चों को सिखाए जानने वाली कविताओं (rhyms) को लेकर अपने आकर्षण को अधिक बढ़ाना चाहते हैं। जो न सिर्फ बच्चों को दूर तक प्रभावित कर रहे हैं वरन् इन छोटी-छोटी कविताओं के महत्व और अर्थ को भी परिवर्तित और स्तर को घटा रहे हैं। संगीत का यह तरीका हमारी शिक्षा व्यवस्था की नींव को कमज़ोर करने का प्रयास कर रहा है। "जौनी जौनी यस पापा" मछली जल की रानी है" "अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो" और "ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार" आदि न जाने कितनी छोटी-छोटी बाल कविताएं हैं जिन के साथ इन नए गानों के माध्यम से छेड़छाड़ की जा रही है।

हम में से लगभग प्रत्येक ने अँग्रेज़ी का पहला सबक "ट्विंकल ट्विंकल" या "जौनी जौनी" से ही सीखा है। ये बाल कविताएं न सिर्फ हमारे पहले सबक हैं वरन् जीवन और शिक्षा ग्रहण करने के क्षेत्र में आदि सोपान हैं। इनका प्रभाव हम पर जिस तन्मयता से पड़ता है वह खेल ही खेल में हमें ज़िंदगी की संघर्षपूर्ण राह की और हमें अग्रसर करता है और हममें एक नवीन उत्साह को जगाता है। यदि ऐसी कविताओं को अपने बाज़ारू हितों को साधने के लिए फूहड़ और अश्लील रूप से प्रस्तुत किया जाएगा तो बालमन पर इनका दुष्प्रभाव दूरगामी रूप से पड़ना स्वाभाविक ही है। परिणाम यह होगा कि इन कविताओं के द्वारा फूहड़ रूप से जो अश्लीलता परोसी जाएगी उसे बच्चे बहुत जल्दी ग्रहण करेंगे और आगे चलकर कुमार्ग पर चल पड़ेंगे। "जौनी जौनी यस पापा" के साथ "चार बोतल वोदका" का कोई तालमेल नहीं होना चाहिए। यह "जौनी जौनी" के संदेश को तो कहीं दूर ले

जाएगा और "चार बोतल वोदका" की लत की और बच्चे को अग्रसर करने में अहम् भूमिका अदा करेगा। जिस नाजुक वक्त में हम बच्चों को जीवन की बुराइयों से कोसों दूर रखने की भरसक कोशिश करते हैं उसी समय में ऐसा घातक प्रयास इन के लिए मुश्किलें खड़ी कर सकता है। विवेक के अभाव में बच्चे ग़लत आदतों की और जल्दी आकर्षित हो उठते हैं। समझ में नहीं आता कि आजकल के गीतकारों ने इन बाल कविताओं को अपने नितांत फूहड़ गीतों में किस प्रलोभन के तहत शामिल कर लिया है। मुझे इसमें कोई ऐसा बाज़ारू हित नहीं प्रतीत होता जो इनके प्रयोग के अभाव में साधा नहीं जा सकता था।

"अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो" हम सबके बचपन की क्रीड़ास्थली में सदा-सर्वदा गूँजता रहा है। इसकी अनुगूँज न सिर्फ हमें और हमारे बाल समूह को आनंदित करता रहा है वरन् इसने सारे माहौल को भी ख़ुशनुमा बनाए रखा है। आजके सीमित क्षेत्रफल के वातावरण में भी जब भी हम अपने किसी छोटे बच्चे को खिलाते हैं तो यदा-कदा इस बाल कविता का सहारा लेते रहते हैं। परंतु एक नितांत आधुनिक नग्न यथार्थ का चित्रण करने वाले भव्य गीत में जिस तरह इसे प्रयुक्त किया गया है वह बालमन के लिए तो घातक है ही हमें भी कहीं न कहीं शर्मसार कर देता है। "अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो" के पश्चात् जब "साथ में अपने सोने दो" और इससे भी आगे बढ़कर जब "जो होता है होने दो" को जोड़ दिया जाए तो बरसों से चला आरहा कविता का अर्थ खंडित ही नहीं हो जाएगा वरन् सारी कविता फूहड़ और अश्लील हो उठेगी। फिर कल्पना कीजिए कि क्या सोचकर आप अपने नौनिहाल को इस कविता का स्वरण करते हुए झूला झुलाएंगे। कविता को सिर्फ बिगाड़ा ही नहीं गया बल्कि उसमें अश्लील शृंगारिकता को घुसेड़ दिया गया है और धुन इस तरह तैयार की गई है कि यह अश्लील शृंगारिकता ही आकर्षक और प्रमुख हो उठती है। बाल कविता का मूल कहीं दूर छिटक सा जाता है।

बाज़ार आज हम पर इतना हावी हो गया है कि वह हमारे रोम-रोम में घुस चुका है। हमारा प्रत्येक व्यवहार बाज़ार को दृष्टि में रखते हुए घटित हो रहा है। हम आपादमस्तिष्क बाज़ार को प्रदर्शित कर रहे हैं। हमारी फिल्में जो बाज़ारका ही अंग हैं उनका गीत और संगीत भी लाभ को दृष्टि में रखकर तैयार किया जा रहा है। फिर उससे नैतिकता प्रभावित हो या संस्कार समाज प्रभावित हो या व्यक्ति, सारी मानवता ख़त्म हो जाए पर निर्माताओं के लाभ पर आँच तक नहीं आनी चाहिए। इसंदर्भ में एक ताज़ा उदाहरण देना समुचित रहेगा। प्रसंग है कि "आज रात का सीन बना ले" की क़ातिलानारिक्वेस्ट को अंजाम दिए जाने का रौबीला प्रयास किया जा रहा है और इस प्रयास में कहीं न कहीं नायक सारी व्यवस्था और सत्ता को अपनी मुट्ठी में बताता है-

> ""किससे तू शरमा रई है, सीन चलेंगे खुल्लमखुल्ले।
> जिनका ज़ोर नहीं चलता बेबी, उनको फड़के लै गए ठुल्ले।
> पुलिस की टेंशन मत्त लियो, मनिश्टर अपणा भाई है।
> जो नाकों पे खड़े हैं, उनकी भरती मैंने कराई है।""

ऐसा प्रतीत होता है कि सारी राजनीति और कानून व्यवस्था जनाब के हाथों की कठपुतली है। "ठुल्ला" कहने पर केजरीवाल साहब मुश्किल में पड़ गए थे पर भाइसाहब करोड़ों डकार गए और उनका बाल बाँका भी नहीं हो सका।

इन हिंदी गानों में जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है उसे हम वयस्क तो अपने मनोरंजन का हिस्सा बना सकते हैं परंतु अबोध बच्चों के लिए ऐसा करना असंभव सा हो जाता है क्योंकि वह इस आयु में उस अवस्था में होता है जिसमें उसे जो कुछ भी परिवेश से मिलता है वह निःसंकोच उसे ग्रहण कर लेता है। आजकल के गानों में केवल अश्लील शब्दों का प्रयोग ही नहीं किया जा रहा बल्कि ऐसी-ऐसी गालियों का इस्तेमाल किया जा रहा है जो एक सभ्य व्यक्ति के मुख सेसुनने में तो नहीं ही मिलती बल्कि सार्वजनिक स्थानों पर इनका प्रयोग वांछनीय भी नहीं रहता। ऐसी गालियाँ इन फिल्मी गीतों के माध्यम से ठुमकों के साथ में आजकल के नवयुवक-युवतियाँ धड़ल्ले से उच्चरित कर रहे हैं और ऐसा करने में उन्हें कोई संकोच भी नहीं प्रतीत होता। ये गालियाँ इन गीतों के माध्यम से आजकल के नए मुहावरे से बन गए हैं। आस्चर्य की बात यह है कि अपने साथ-साथ अपने अबोध बच्चों को भी हम इन अश्लील गीतों को गाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हम इसके दुष्परिणामों के बारे में सोच भी नहीं पाते। "सलमान का फैंण" वाले गीत के अंतिम चरण को जब एक ढाई साल का बच्चा अपनी तुतलाती आवाज़ में गाने की कोशिश करता है तो रूह इस कल्पना मात्र से काँप उठती है कि इतनी छोटी उम्र में हमारा बच्चा उस मार्ग से परिचित हो रहा है जिससे हम उसे सारी ज़िंदगी बचाए रखना चाहते हैं। ऐसे सैकड़ों नए गानों की सूचि जारी की जा सकती है जो इन अश्लील शब्दों से भरे पड़े हैं। परंतु सभ्य समाज इसका संज्ञान तक लेना उचित नहीं समझता।

ABCD को मौलिक रूप से प्रस्तुत करने वाला नया गीत तो हम सबने सुना ही होगा। जिसमें A for apple B for boy वाली हमारी बाल शिक्षा को बिल्कुल ही बदल दिया गया है और इस तरह से प्रस्तुत किया गया है कि वह हमें लफंडरबाजी के अतिरिक्त कुछ नहीं सिखाती। आप कह सकते हैं कि गाने

कुछ सिखाने के लिए नहीं होते परंतु जिस उम्र के बच्चों की शैक्षणिक उपादानों के साथ ये गीत छेड़छाड़ कर रहे हैं वे बच्चों की शिक्षा काही काम कर रहे हैं और जब हम उनको बिगड़े और अश्लील रूप में प्रस्तुत करेंगे तो परिणाम भयानक होने की संभावना बढ़ जाती है। ज़रा सोचिए यदि C for" cat" की जगह "सी से चिल्ला के गाओ" और "D for dog" की जगह "डी से दारू पीते जाओ" का घातक प्रयोग होगा तो अबोध बच्चे उससे क्या तो सीखेंगे और क्या उनके भोले मन पर इस अश्लीलता का दुष्प्रभाव पड़ेगा।

ऐसे ही न जाने कितने उदाहरण और प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिनमें बाल कविताओं और बाल शिक्षा के अन्य उपादानों के साथ छेड़छाड़ की जा रही है। यदि यूँ कहा जाए कि ऐसे प्रयोग आज गीत और संगीत दोनों में तड़का मारने का काम कर रहे हैं तो कदाचित् अतिशयोक्ति न रहेगी। निर्माता तो अपने प्रोडक्ट को बाज़ार के अधिक से अधिक अनुकूल बनाने के लिए इस तरह का प्रयोग करते हैं परंतु सभ्य समझे जाने वाला समाज भी इसका कोई प्रतिरोध करता प्रतीत नहीं होता। शतकटिया सेंसर बोर्ड भी इस तरह के गीत-संगीत पर कोई कैंची चलाना उचित नहीं समझता। ऐसा लगता है कि इनके कट्स मात्र कट्स होते हैं उनका जीवन और समाज से कोई विशेष सरोकार नहीं हरहता। कहना न होगा कि आज सिनेमा अपने विभिन्न उपादानों से मात्र बाज़ार की माँग ही पूरी कर रहा है सामाजिक सरोकारों को नहीं साध रहा। हमे नहीं भूलना चाहिए कि सिनेमाजगत् भी बाज़ार में पूँजी लगाता है और वह ऐसी ही सामग्री तैयार करेगा जो उसकी पूँजी अधिकाधिक लाभ के साथ उसे लौटा सके। इस लिए सिनेमा को इस दुर्दशा के लिए एकमात्र दोषी ठहरा देना अनुचित रहेगा।

यदि हमें सिनेमा जगत् के इन दोषों से बचना है तो समाज में इनके दुष्परिणामों के प्रति जागृति होना अनिवार्य है। हमें ऐसे विषैले गीतों के प्रति अरुचि दिखानी पड़ेगी ताकि निकट भविष्य में कोई ऐसा घातक विष जो हमारे बच्चों का भविष्य बिगाड़ने का कार्य कर रहा है समाज के सामने परोसने की ज़ुर्रत न कर सके। जब हम इनको नकारेंगे तभी बाज़ार से इनकी विदाई हो सकेगी।

यह बड़ा पुराना परंतु शाश्वत वाक्य है कि बच्चे देश और समाज का भविष्य होते हैं। यह हमारे बच्चों की शिक्षा-दीक्षा पर ही निर्भर करता है कि हमारे देश और समाज का कल कैसा रहने वाला है। फिल्में और उनमें आनेवाला गीत-संगीत बड़ी गहराई से हमारे जीवन में घुसे हुए हैं। अगर इनकेगीत हमारे बच्चों की शिक्षा-दीक्षा को दुषप्रभावित करने वाले तत्वों की भरमार बढ़ती चली जाएगी तो यह हमारे देश और समाज के लिए प्राणघातक सिद्ध होगा। मुझे लगता है कि अभी भी समय है कि कम से कम हम अपने इस मनोरंजन के साधन से इस फूहड़ता को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की कोशिश करें। ऐसा भी लगता है कि इस देश की लचिली व्यवस्था में कोई कानून इसे नहीं रोक पाएगा। यह ज़िम्मेदारी उन्हीं को सौंपनी चाहिए जो सिनेमाजगत् के कार्यकर्ता हैं।

फिल्म और उनके गीत-संगीत हमारी ज़िंदगी का अहम् हिस्सा हैं और मनोरंजन जीवन की अनिवार्यता। एक अभिभावक और देश का नागरिक होने के नाते मैं गुज़ारिश करना चाहूँगा कि इस मनोरंजन को भरसक आगे बढ़ाएं और हमारे जीवन को आनंदित करते रहिए परंतु हमारे बच्चों के भविष्य की कीमत पर आपको कभी भी अपना व्यवसाय बढ़ाने की इजाज़त नहीं मिलनी चाहिए। आप "सुबहसबेरे ब्रेकप" के बाद जब मर्ज़ी चाहे "पैचप" कर लें, हमें कोई आपत्ति नहीं है। आप जिस मर्ज़ी की चाहे "माँ भैंण" करते रहें, हम कुछ नहीं कहेंगे। "आंटीपुलिस बुला लेगी" तो भी मत डरिए और अपनी मौज-मस्ती जारी रखिए लेकिन ख़ुदा के लिए अपने उस "स्टाइल" को बदलिए जिसके कारण हमारे छोटे-छोटे बच्चे आपकी इस अश्लीलता की और खिंचे चले आ रहे हैं और जाने-अनजाने ही पथभ्रष्ट हो रहे हैं। आख़िर आप भी हमारे ही समाज के ही अंग हैं।